सुंदरकांड आयोजन के लिए माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

हनुमान जी सम्पूर्ण रामायण के सबसे प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक प्रमुख व्यक्तित्व हैं। बजरंगबली हनुमान जी अमर – अविनाशी देव हैं।

बिना हनुमान जी के आप रामायण की कल्पना नहीं कर सकते। यानी हुनमान जी के बिना रामायण अधूरी है। हनुमान जी परम भक्त, परम मित्र और एक वफादार साथी है। इतने बलवान होते हुए भी, इतने शक्तिमान होते हुए भी, इतने बुद्धिमान होते हुए भी अहंकार से बहुत दूर हैं।

भगवान के बाकी सभी अवतारों के विपरीत जिन्हें अपने उद्देश्यों को पूरा करने के बाद इस पृथ्वी को त्यागना पड़ा, वहीं भगवान हनुमानजी को भगवान शिव जी द्वारा एक विशेष वरदान प्राप्त था। उन्हें मृत्युंजय का वरदान प्राप्त हुआ था, जिसका अर्थ है वो सदा अमर रहेंगे।

हनुमान जी को कलियुग में सबसे प्रमुख 'देवता' माना जाता है। रामायण के सुन्दर कांड और तुलसीदास की हनुमान चालीसा में बजरंगबली के चरित्र पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इसके अनुसार हनुमान जी का किरदार हर रूप में लोगों के लिए प्रेरणादायक है।

हनुमान जी के बारे में तुलसीदास जी लिखते हैं, 'संकट कटे मिटे सब पीरा - जो सुमिरै हनुमत बल बीरा'।

यानी हनुमान जी में हर तरह के कष्ट को दूर करने की क्षमता है।

श्री हनुमान जी महाराज से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं-

हनुमान जी परम् बलशाली है और उन्होंने अपने बल का उपयोग धर्म के लिए किया, प्रभु की सेवा के लिए किया। उन्होंने कभी भी परम् पद पाने की लालसा नहीं की। वह प्रभु के सेवक बने रहे और सेवक रहते प्रभु के आशीर्वाद से ईश्वर का पद प्राप्त किया।

हनुमान जी ने सेवक बनकर अपना जीवन प्रभु चरणों में अर्पित किया और ईश्वर पद प्राप्त किया। उन्होंने हमें बताया कि जब आप धर्म के साथ खड़े है और अन्याय और अधर्म के विरुद्ध हैं, तो आप कैसे उच्च पद प्राप्त करते है।

सीता जी से हनुमान पहली बार रावण की 'अशोक वाटिका' में मिले, इस कारण सीता उन्हें नहीं पहचानती थीं। एक वानर से श्रीराम का समाचार सुन वह आशंकित भी हुईं, परन्तु हनुमान जी ने अपने 'संवाद कौशल' से उन्हें यह भरोसा दिला ही दिया की वह राम के ही दूत हैं। सुंदरकांड में इस प्रसंग को इस तरह व्यक्त किया गया हैः

'कपि के वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास।

जाना मन क्रम बचन यह ,कृपासिंधु कर दास।।

हनुमान जी ने समुद्र पार करते समय सुरसा से लड़ने में समय नहीं गंवाया। सुरसा हनुमान जी को खाना चाहती थी। उस समय हनुमान जी ने अपनी चतुराई से पहले अपने शरीर का आकार बढ़ाया और अचानक छोटा रूप कर लिया।

छोटा रूप करने के बाद हनुमान जी सुरसा के मुंह में प्रवेश करके वापस बाहर आ गए। हनुमान जी की इस चतुराई से सुरसा प्रसन्न हो गई और रास्ता छोड़ दिया। चतुराई की यह कला हम हनुमान जी से सीख सकते हैं।

लंका में रावण के उपवन में हनुमान जी और मेघनाथ के मध्य हुए युद्ध में मेघनाथ ने 'ब्रह्मास्त्र' का प्रयोग किया। हनुमान जी चाहते, तो वह इसका तोड़ निकाल सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वह ब्रह्मास्त्र का महत्व कम नहीं करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने ब्रह्मास्त्र का तीव्र आघात सह लिया। हालांकि, यह प्राणघातक भी हो सकता था।

तुलसीदास जी ने इस पर हनुमानजी की मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण किया हैः

'ब्रह्म अस्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह विचार।

जौ न ब्रहसर मानउं, महिमा मिटई अपार।।

हम अक्सर अपनी शक्ति और ज्ञान का प्रदर्शन करते रहते हैं, कई बार तो वहां भी जहां उसकी आवश्यकता भी नहीं होती। हनुमान चालीसा में लिखा है,

'सूक्ष्म रूप धरि सियंहि दिखावा,

विकट रूप धरि लंक जरावा।'

माता सीता के सामने उन्होंने खुद को लघु रूप में रखा, क्योंकि यहां वह पुत्र की भूमिका में थे, परन्तु संहारक के रूप में वह राक्षसों के लिए काल बन गए।

एक ही स्थान पर अपनी शक्ति का दो अलग-अलग तरीके से प्रयोग करना हनुमान जी से सीखा जा सकता है।

अवसर के अनुसार खुद को ढाल लेने की हनुमानजी की प्रवृत्ति अद्‌भुत है। जिस वक्त लक्ष्मण रणभूमि में मूर्छित हो गए, उनके प्राणों की रक्षा के लिए वे पूरे पहाड़ उठा लाए, क्योंकि वे संजीवनी बूटी नहीं पहचानते थे। अपने इस गुण के माध्यम से वे हमें तात्कालिक विषम स्थिति में विवेकानुसार निर्णय लेने की प्रेरणा देते हैं।

उनका व्यक्तित्व आत्ममुग्धता से कोसों दूर है। सीताजी का समाचार लेकर सकुशल वापस पहुंचे श्री हनुमान की हर तरफ प्रशंसा हुई, लेकिन उन्होंने अपने पराक्रम का कोई किस्सा प्रभु राम को नहीं सुनाया।

जब श्रीराम ने उनसे पूछा- 'हनुमान ! त्रिभुवनविजयी रावण की लंका को तुमने कैसे जला दिया? तब प्रत्युत्तर में हनुमानजी ने अपनी प्रशंसा नहीं की, बल्कि कहा कि हे रघुनन्दन! यह सब आपकी कृपा, आपकी प्रभुता है, इसमें मेरा कुछ नहीं है।

सो सब तव प्रताप रघुराई।

नाथ न कछू मोरि प्रभुताई ।। (सुंदरकांड) ।

समुद्र में पुल बनाते वक़्त अपेक्षित कमजोर और उच्चश्रृंखल वानर सेना से भी कार्य निकलवाना उनकी विशिष्ठ संगठनात्मक योग्यता का परिचायक है। राम-रावण युद्ध के समय उन्होंने पूरी वानरसेना का नेतृत्व संचालन प्रखरता से किया।

एक कुशल प्रबंधक व मानव संसाधन का बेहतर उपयोग करने वाले राम भक्त हनुमान जी में मैनेजमेंट की जबरदस्त क्षमता है।

संपूर्ण रामचरित मानस में और हनुमानजी को समर्पित सुंदरकांड में ऐसी कई घटनाओं का जिक्र है, जहां पर हनुमान जी ने बल और बुद्धि का बेहतरीन संतुलन पेश किया है। बल और बुद्धि का उपयोग करते हुए ही हनुमान जी ने माता सीता की खोज की थी। हनुमान जी ने हर समस्याओं को परिस्थितियों के हिसाब से सुलझाया है। जहां बल का प्रयोग करना था, वहां बल का प्रयोग किया और जहां विनम्रता की आवश्यकता थी, वहां बुद्धि का पूर्ण उपयोग कर परेशानी को दूर किया।

हनुमान जी माता सीता की खोज में जब लंका की तरफ बढ़ रहे थे, तभी समुद्र ने हनुमान जी से विश्राम करने का आग्रह किया और अपने भीतर रह रहे मैनाक पर्वत से कहा कि तुम हनुमान जी को विश्राम करने दो। हनुमान जी विश्राम करने से मना करते हुए निमंत्रण का मान रखते हुए मैनाक पर्वत को छू कर आगे की ओर निकल पड़े।

हनुमान जी की इस बात से हमे यह सीखने को मिलता है कि हमें जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए हमें रुकना नहीं चाहिए।

हनुमान जी निडरता के उदाहरण हैं। निर्भय होकर अकेले लंका जाते हैं और पूरी लंका को जला कर वापस आ जाते हैं। हालाँकि हम सभी हनुमान जी की तरह शक्तिशाली नहीं हैं, पर अपने फैसले हम सभी को निडरता से लेने चाहिये। अन्याय के खिलाफ निर्भय होकर आवाज उठानी चाहिये। अपने आप पर भरोसा आपको निर्भीक बनता है।

जब हनुमान जी सीता जी का समाचार लेकर सकुशल वापस आये, तो सभी ने उनकी प्रशंसा की, हनुमान जी चाहते, तो अपनी शक्ति और पराक्रम

का बखान कर सकते थे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया और अपना सारा श्रेय भगवान श्री राम जी के आशीर्वाद को दे दिया।

हनुमान जी इतने शक्तिशाली हैं, बाबजूद इसके उनमे अहंकार नाम की चीज़ नहीं हैं। वे बहुत विनम्र हैं और अपने भगवान श्री राम के प्रति समर्पित हैं। एक मज़बूत शरीर उसके साथ ऊँचा मनोबल, धन धान्य से पूर्ण होने पर भी हमेशा विनम्रता एक बहुत ही बेहतर गुण है।

आप ज़िन्दगी में कितने भी सफल बन जाएँ, कभी अहंकार की भावना आपके हृदय में नहीं आनी चाहिये। आपका अहंकार नहीं, बल्कि आपकी विनम्रता और करुणा ही लोगों के हृदय में रहती है। वही पेड़ झुकता है, जिसपर फल लगे होते हैं।

रामायण में हनुमान जी ने कई बार प्रभु श्री रामचंद्र जी के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया है। सुग्रीव और बाली के आपसी संघर्ष के वक़्त भी प्रभु राम को बाली के वध के लिए राजी करना, क्योंकि एक सुग्रीव ही प्रभु राम की मदद कर सकते थे। इस तरह हनुमान जी ने सुग्रीव और प्रभु श्रीराम दोनों के कार्यों को अपने बुद्धि और चतुराई से सुगम बना दिया। यहां हनुमान जी की मित्र के प्रति परम निष्ठा और आदर्श स्वामीभक्ति' हम सभी के लिए एक बहुत बड़ी सीख है।

हनुमान जी को जो भी कार्य सौंपा गया उसे उन्होंने हर हाल मैं पूर्ण किया। अपने कर्तव्य को निभाने के प्रति उन्होंने कभी नकारात्मक सोच का प्रयोग नहीं किया, जैसे मैं नहीं करूंगा, मैं नहीं कर पाऊंगा, मैं समझ नहीं पा रहा, इसलिए नहीं कर पाउँगा।

जिस वक़्त लक्ष्मण रणभूमि में मूर्छित हो गए थे, उनके प्राणों की रक्षा के लिए हनुमान जी को संजीवनी बूटी लाने का काम सौंपा। हनुमान जी पूरे पहाड़ उठा लाए, क्योंकि वे संजीवनी बूटी नहीं पहचानते थे। हनुमान जी की कर्तव्यनिष्ठा से हम सीख सकते हैं की मनुष्य को अपनी जिम्मेदारी के प्रति शंका स्वरूप नहीं, वरन समाधान स्वरूप होना चाहिए।

मन, कर्म और वाणी पर संतुलन यह हनुमान जी से सीखा जा सकता है। हनुमान जी मैनेजमेंट के सबसे बड़े गुरु हैं। लंका पहुंचने से पहले उन्होंने पूरी रणनीति बनाई। असुरों की इतनी भीड़ में भी विभीषण जैसा सज्जन ढूंढा। उससे मित्रता की और सीता माँ का पता लगाया। भय फ़ैलाने के लिए लंका को जलाया। विभीषण को प्रभु राम से मिलाया। इस प्रकार पूरे मैनेजमेंट के साथ काम को अंजाम दिया। एक बढ़िया मैनेजमेंट बनाकर कठिन से कठिन कार्य को सरल बनाया जा सकता है।

किसी भी काम की शुरुआत करने से पहले घर-परिवार और समाज के बड़े लोगों का आशीर्वाद और सलाह जरूर लेनी चाहिए। ऐसा करने से सकारात्मकता के साथ ही काम करने का साहस मिलता है। ये बात हम हनुमान जी से सीख सकते हैं।

रामायण का किस्सा है। हनुमान जी, जामवंत, अंगद और अन्य वानर सीता की खोज करते हुए संपाति के पास पहुंच गए थे। संपाति ने इन सभी को बता दिया था कि देवी सीता लंका में ही हैं।

हनुमान जी, जामवंत, अंगद और सभी वानर दक्षिण दिशा में समुद्र किनारे पहुंचे। वहां से लंका की दूरी करीब सौ योजन थी। इतना बड़ा समुद्र

पार करके लंका पहुंचना था। वानरों के सामने समस्या ये थी कि समुद्र पार करके लंका कौन जाएगा?

सबसे पहले जामवंत ने कहा कि मैं अब बूढ़ा हो गया हूं और समुद्र पार लंका पहुंचना और सीता की खोज करके वापस लौटना मेरे लिए संभव नहीं है।

अंगद ने कहा कि मैं लंका जा तो सकता हूं, लेकिन वापस लौटकर आऊंगा, इसमें मुझे संदेह है।

उस समय हनुमान जी चुपचाप बैठे थे। जामवंत ने हनुमान जी को प्रेरित किया और कहा कि आपका तो जन्म ही रामकाज के लिए हुआ है, आप चुपचाप क्यों हैं? आप लंका जाइए और देवी सीता की खोज करके लौट आइए।

जामवंत के प्रेरित करने पर हनुमान जी लंका जाने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने जामवंत से पूछा कि आप बताइए, मुझे लंका जाकर क्या-क्या करना है और क्या नहीं करना है?

जामवंत ने हनुमान जी से कहा कि आप सिर्फ देवी सीता की खोज करके लौट आइए। लंका में आपको युद्ध नहीं करना है। जामवंत जी की सलाह हनुमान जी ने ध्यान से सुनी। इसके बाद उन्होंने जामवंत को प्रणाम किया, उनका आशीर्वाद लिया। अन्य वानरों को नमन किया। इसके बाद हनुमान जी लंका की ओर चल दिए। लंका पहुंचकर हनुमान जी सीता की खोज की, लंका को जलाया और फिर श्रीराम के पास लौट आए।

स्वामी विवेकानंद कहते थे-'हनुमान जी युवकों के आदर्श होने चाहिए। हनुमान जी में प्रचंड शक्ति है, लेकिन विनम्रता भी। उनमें अद्‌भुत एकाग्रता

है, असीम क्षमता है, पर अहंकार नहीं है। सेवा की पराकाष्ठा है, पर बदले में कुछ पाने की कोई भावना नहीं है।

साधारण मनुष्य में थोड़ी क्षमता होते ही अहंकार और सेवा करने पर बदले में कुछ पाने की भावना जाती है।'

रामचरित मानस में हनुमान जी की समुद्र यात्रा से आज के छात्र-युवा बहुत कुछ सीख सकते हैं, खासकर अपने काम में, लक्ष्य के प्रति एकाग्रता उनसे जरूर सीखनी चाहिए। हनुमान जी का लक्ष्य था सीता जी की खोज। इस लक्ष्य को पाने में उन्हें कदम-कदम पर मुश्किलों का सामना करना पड़ा। जीवन पथ पर आनेवाली मुश्किलों का कैसे सामना करें, इसका समाधान-सूत्र हनुमान जी बताते हैं।

हनुमान जी ने हर बाधा का सफलता से सामना किया:

हनुमानजी की समुद्र यात्रा में पहला विघ्न आया- मैनाक पर्वत। मैनाक पर्वत मित्र के रूप में आता है, हनुमान जी से कहता है, आप थोड़ा विश्राम कर लें, फिर आगे जाएं। हनुमान जी ने कहा-अभी तक राम का कार्य शुरू नहीं हुआ है, मैं विश्राम कैसे कर सकता हूं?

हनुमान जी का मन लक्ष्य की ओर एकाग्र है। वे लक्ष्य के सिवा कुछ और नहीं सोचते। हनुमान जी की तरह हमारा मन भी लक्ष्य की तरफ होना चाहिए।

अगर हम इस तरह सोचें कि आज थोड़ा विश्राम कर लेते हैं, कल काम करेंगे, तो कभी लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। स्वामी विवेकानंद कहते हैं-उठो, जागो, लक्ष्य तक पहुंचे बिना रुको मत।

हनुमान जी के सामने दूसरा विघ्न आता है सुरसा के रूप में। देवताओं ने यह जानने के लिए कि हनुमान जी अपने कार्य के प्रति एकाग्र हैं या नहीं, वे कार्य पूरा कर पाएंगे या नहीं, इसकी परीक्षा लेने के लिए सुरसा को भेजा। वह हनुमान जी को खाना चाहती थी। उसने अपना मुंह बड़ा किया। हनुमान जी ने भी अपना शरीर बड़ा कर लिया। जब सुरसा ने अपना मुंह सौ योजन तक बढ़ाया, तो हनुमान जी ने अपने को बहुत छोटा कर लिया। सुरसा के मुंह में प्रवेश करते हैं, मुंह बंद करने से पहले ही हनुमान जी निकल जाते हैं। हनुमान जी की विनम्रता देखकर सुरसा रास्ते से हट जाती है।

देवता सद्गुणों के प्रतीक हैं, पर वे सुरसा को भेजते हैं, हनुमान जी के पथ में रुकावट डालते हैं। हम सबमें भी कोई-न-कोई सद्गुण है, कोई अच्छा बोलता है, कोई अच्छा खेलता है, लेकिन इन सद्गुणों से हमारे अंदर अहंकार हो जाए, तो मनुष्य का पतन हो जाता है। हनुमान जी बड़ा होना और छोटा होना, दोनों जानते हैं। वे बड़े होकर भी विनम्र रहते हैं। हम सबको भी अपने अच्छे गुणों के बावजूद विनम्र होना चाहिए।

हनुमानजी आगे बढ़ते हैं, लेकिन कुछ देर के बाद वे उड़ नहीं पाते। उन्हें लगा कि समुद्र के भीतर से कोई उन्हें खींच रहा है। दरअसल समुद्र में एक राक्षसी रहती थी। वो एक माया जानती थी। जो भी पक्षी आकाश में उड़ते गुजरते, तो उसकी परछाई समुद्र में पड़ती। राक्षसी परछाई को पकड़ कर समुद्र में खींच लेती थी। ये राक्षसी सिर्फ समुद्र में नहीं रहती, हमारे अंदर भी रहती है, उसका नाम ईर्ष्या है।

कोई जब ऊपर उठता है, तो ईर्ष्या उसे नीचे गिराती है। हनुमान जी ने उस राक्षसी को मार दिया। हमारे मन में भी जब ईर्ष्या आए, तो उसे मार देना

चाहिए, क्योंकि जो ईर्ष्या भाव के कारण दूसरे को गिराता है, उसे भी उठकर गिरना ही पड़ता है।

धर्मशास्त्रों में आत्मज्ञान की साधना के लिए तीन गुणों की अनिवार्यता बताई गई है- बल, बुद्धि और विद्या। यदि इनमें से किसी एक गुण की भी कमी हो, तो साधना का उद्देश्य सफल नहीं हो सकता है।

सबसे पहले तो साधना के लिए बल जरूरी है। निर्बल व कायर व्यक्ति साधना का अधिकारी नहीं हो सकता है। दूसरे साधक में बुद्धि और विचार शक्ति होनी चाहिए। इसके बिना साधक पात्रता विकसित नहीं कर पाता है। तीसरा अनिवार्य गुण विद्या है।

विद्यावान व्यक्ति ही आत्मज्ञान हासिल कर सकता है। हनुमान जी के जीवन में इन तीनों गुणों का अद्‌भुत समन्वय मिलता है। इन्हीं गुणों के बल पर वे जीवन की प्रत्येक कसौटी पर खरे उतरते हैं ।

रामकथा में हनुमानजी का चरित्र अत्यंत प्रभावशाली है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शो को मूर्त रूप देने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम स्वयं कहते हैं- जब लोक पर कोई विपत्ति आती है तब वह त्राण पाने के लिए मेरी अभ्यर्थना करता है, लेकिन जब मुझ पर कोई संकट आता है तब मैं उसके निवारण के लिए पवनपुत्र का स्मरण करता हूं।

जरा विचार कीजिए! श्रीराम का कितना अनुग्रह है हनुमान पर कि वे अपने लौकिक जीवन के संकटमोचन का श्रेय उनको प्रदान करते हैं और

कैसे शक्तिपुंज हैं हनुमान, जो श्रीराम तक के कष्ट का तत्काल निवारण कर सकते हैं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस हनुमान जी के नाम-जप-निष्ठा का बराबर उदाहरण देते थे। उन्होंने कहा था- 'मन के गुण से हनुमान जी समुद्र लांघ गये। हनुमान जी का सहज विश्वास था, मैं श्रीराम का दास हूं और श्रीराम नाम जपता हूं। अत:, मैं क्या नहीं कर सकता?'

स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा था- 'देश के कोने-कोने में महाबली श्री हनुमानजी की पूजा प्रचलित होनी चाहिए। दुर्बल लोगों के सामने महावीर का आदर्श उपस्थित करना चाहिए। देह में बल नहीं, हृदय में साहस नहीं, तो फिर क्या होगा इस जड़पिंड को धारण करने से?